News Broadcasting & Digital Standards Authority
Order No. 146 (2022)

Complainant: Mr. Matin Mujawar
Programme: **Karnataka Hijab Row - कट्टरता की पढाई का मास्टर कौन?**
Broadcaster: Zee News
Date of Broadcast: 8.2.2022

Since the complainant did not receive a reply from the broadcaster within the stipulate time period, the complaint was escalated to the second level i.e., NBDSA.

Complaint dated 14.2.2022:

प्रोग्राम का नाम : DNA: Karnataka Hijab Row - कट्टरता की पढाई का मास्टर कौन? Sudhir Chaudhary

1) Zee न्यूज़ ने कर्नाटका में चल रहे हिजाब के मामले को लेकर "इस्लाम और मुस्लिम समाज पर एक तरफा निशाना थामा. है " जिस तरह से हिजाब विषय को लेकर Zee न्यूज़ ने खबरे चालयी है उसे से Zee न्यूज़ की सनातनी और कट्टर मुस्लिम वरोधी सिद्धांत और विचार साफ़ प्रकट होते है.

2) इस से पहले भी ताल ठोक के स्पेशल एडिशन में छिपे चेहरे के पीछे आतंक Burka Ban Switzerlnd इस प्रोग्राम पर NBDSA ने Zee न्यूज़ के खिलाफ नस्ली एवं धार्मिक सद्भाव को बाधा पहुंचने वाली संवेदनशील, भड़काऊ, शांतता भंग करने वाली खबरे दिखने पर आपत्ति जतायी है उसका Order No 118 (2021) है

3) खबरों का पूरा समय ३३मिनट और १९ सेकंड है. इस पुरे समय में चलायी गई खबरे एक तरफा और बरगलाने वाली, अल्पसंख्यकों को मुजरिम के कटघरे में खड़ा करनेवाली, और देश के नजरो में निचा दिखाने वाली है. ये खबरे नहीं है बल्कि खबरों के नाम पर सरे आम भड़काया जा रहा है, लोगो को चेतावनी दी जा रही है.

4) खबरे youtube, facebook और सोशल मीडिया पर लाखोबार शेर होचुकी है और इनके कमेंट में लोगों ने मुस्लिम समाज के प्रति अपशब्द का इस्तेमाल किया है इस्लाम धर्म प्रति द्वेष निर्माण कर्नेवली भाषा का इस्तेमाल हुआ है.

5) बुरखा पहनी लड़की : अल्लाह हुअक्बर(३)

आंदोलक छात्र : जय श्री राम, जय श्री राम, जय श्री राम

बुरखा पहनी लड़की : अल्लाह हुअक्बर .... अल्लाह हुअक्बर .... (In titles on screen) ये मेरा बुरका क्यों हटाना चाहते है? इन लोगो को बुरका हटाने का हक किसने दिया ? (

लड़की का कहना है के मौजूद प्रदर्शनर्थि उस लड़की का बुर्खा उतरवाना चाहते थे फिर भी Zee न्यूज़ के एंकर सुधीर चौधरी ने कूटनीति से इस लड़की को विवाद के लिए जिम्मेदार ठहराया है.

सुधीर चौधरी : अब इस के बाद क्या होगा ये कहानी हम आप को अभी से बता देते है अब होगा ये इस लड़की ने कहा है के ये जो बाकि के छात्र है ये मेरा बुरखा उतरना चाहते थे. ये नहीं चाहते थे के में बुरखा पह्नु ये लड़की आरोप लगा रही है. इसके बाद ये तस्वीरें वायरल होजायेगी जो की हो भी गयी है. पाकिस्तान जैसे जो देश है ''और हमरे ही देश में जो पाकिस्तान के कट्टर समर्थक है'' वो ये आरोप लगाना शुरू करेंगे के इतने सारे छात्र मिलकर एक मुस्लिम लड़की को परेशान कर रहे है. इस के बाद पश्चिमी मिडिया यहाँ पर आएगा और फिर भारत की छबि को ख़राब किया जायेगा और कहा जाएगा के भारत में मुस्लिम लड़किया, मुस्लिम छात्राये बिलकुल भी सुरक्षित नहीं है. देखिये उनके साथ क्या हो रहा है.

(यहाँ Zee न्यूज़ ने बुर्खे के समर्थन में प्रदर्शन करने वाले भारतीय मुसलमानो को पाकिस्तान का कट्टर समर्थक कहा है.)

6) सुधीर चौधरी : हम आप को बता सकते है के कोविड तो एक न एक दिन चला जाएग, कोविड की तो वैक्सीन आगयी है. लेकिन ये जो मुद्दा आज आया है ये कोविड से भी कही खतरनाक है. इस बीमारी की कोई वैक्सीन नहीं है. और ये बीमारी कोविड से भी ज्यादा खतरनाक है और अब आप सोचिये हिजाब की वजह से करनाटक में स्कुल और कॉलेज बंद करने पर गये है इसे से ज्यादा दुर्भाग्य की बात क्या हो सकती है

इस पुरे समय में मुस्लिम समाज को टारगेट करने के हेतु हिजाब पहने हुए लड़कियों को ही स्क्रीन पर दिखया गया. ये लड़किया संविधानिक तरीके से हिजाब की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रही है उन्हें और उनके मांग कोविड बीमारी से भी ज्यादा खतरनाक कहा गया है

Zee न्यूज़ द्वारा इस पुरे खबर में अधिकतम मुस्लिम छात्रों को फोकस करके एक तरफा टारगेट किया है.

7) Zee न्यूज़ ने समाचार माध्यम का गलत इस्तेमाल किया है Zee न्यूज़ ने रिपोर्टिंग की जगह समाज में अल्पसंख्यकों के प्रति भड़काऊ तथा देश में तनाव भड़काने वाले शब्दों का प्रयोग किया है. Zee न्यूज़ समाचार माध्यम का दुरूपयोग हिन्दू मुस्लिम करके नफरत फ़ैलाने तथा देश आगजनी तथा हिंसक वातावरण फ़ैलाने के लिए किया है. यह देशद्रोह का गुन्हा है.

8) Zee न्यूज़ के खिलाफ इस से पहले भी अल्पसंख्यकों प्रति समाज में नफरत फ़ैलाने वाले खबरें और भड़काऊ डिबेट चलाने के विरोध में NBDSA में कई शिकायते दर्ज है

9) Zee न्यूज़ राष्ट्र एकात्मता के लिए खतरा है और लगातार इस तरह बताई जाने वाले खबरे देश में अल्पसंख्यको का नरसंहार करने के हेतु से चलायी जा रही है जो एक बहोत गहरी साजिश और मुस्लिम विरोधी अजेंडा है.

10) NBDSA ने Zee न्यूज़ के खिलाफ नस्ली एवं धार्मिक सद्भाव को बाधा पहुंचने वाली संवेदनशील, भड़काऊ, शांतता भंग करने वाली खबरे दिखने पर नाराजगी और ऐतराज जताया है इस तरह के प्रोग्राम दुबारा न दौरये जाए ऐसे बार बार सूचना करने के बावजुद Zee न्यूज़ देश के एकता और अखंडता तो खतरा पंहुचा रहा है और कानून व्यवस्था को चेतावनी देने का लगातार सिलसिला चला रहा है और कानून व्यवस्था को चेतावनी देने का लगातार सिलसिला जारी रखा है.

11) Zee न्यूज़ समाचार माध्यम राष्ट्रीय एकात्मता के लिए खतरा है और लगातार इस तरह बताई जाने वाले खबरे देश में अल्पसंख्यको का नरसंहार करने के हेतु से चलायी जा रही है. भारतीय मुसलमानो को पाकिस्तानी और कोरोना वायरस से भी ज्यादा खतरनाक कह कर Zee न्यूज़ ने एक बहोत गहरी साजिश के तहत मुस्लिम विरोधी अजेंडा चलाया है.

देश में मेल मिलाप से रहने वाले मुस्लिम समुदाय और विभिन्न धर्मों जातियों के लोगों के बिच नफरत फैलाने का जुर्म Zee न्यूज़ प्रशासन और उसका न्यूज़ एंकर सुधीर चौधरी ने किया है.

Complaint dated 23.2.2022 filed with NBDSA

The complainant stated that a news anchor/journalist/presenter should not make any derogatory, derisive or judgemental statements as part of reporting or commenting. However, by doing this, the broadcaster had shown disrespect towards the law and the Constitution of India. The entire news appeared to be the broadcaster's communal intention, which was specially designed to defame Islam and Muslims. Through such statements, the broadcaster has tried to disturb the communal harmony of the state.

Reply dated 27.2.2022 from broadcaster:
The broadcaster stated that in the complaint dated 13.2.2022, various false, misleading, frivolous, and motivated allegations had been raised against the contents of its prime-time show 'DNA', aired on the channel Zee News on 8.2.2022.

The present complaint was not maintainable before the Hon'ble NBDSA since the impugned programme did not violate any of the Guidelines and Code of Ethics/principles of self-regulation. The broadcaster stated that the complainant had miserably failed to point out which of the Guidelines or principles of self-regulation or Code of Ethics had been offended by it in the impugned programme.

The broadcaster stated that the allegations in the subject complaint were completely baseless and motivated. The contents of the impugned programme were not intended to propagate a narrative against any particular religion or community, nor was it telecast to spread hate or outrage the religious feelings of any particular religion. The reporting in the impugned was also completely balanced, neutral, and specific to the issue involved. Therefore, the allegations that it had, by virtue of the impugned programme, intended to provoke religious tension were completely false and baseless.

That in the programme 'DNA' aired on 08.02.2022, it had fairly and objectively conducted a detailed analysis of the recent Hijab Controversy that arose in the State of Karnataka when various Muslim Girl students raised a demand to allow them to attend classes in Hijab/Burqa. In the programme, the broadcaster stated that it had condemned the actions of all the students, irrespective of their religion, who were giving so much importance to these issues over their education and career. It also fairly and objectively presented the views of protesting Muslim Girls with respect to their demand to withdraw the ban on Burqa/Hijab in schools and colleges.

In the impugned programme, it had conducted an analysis of the aforesaid issue and emphasized on the education and career of the students of this country. Its entire reporting was completely free from bias and partiality, and the same was objectively presented in the interest of all the students, irrespective of their religion. The allegations to the effect, that the broadcaster had targeted Muslims by displaying pictures of Hijab-wearing girls in its show and that the demand of the protesting girls was compared with Covid-19 were completely false, misleading and out of context. The contents of the entire programme were completely neutral, and it had presented the news and displayed the pictures in the most balanced manner without having any intention to target any particular community or religion. As far as the comparison of demand of the protesting girl students with coronavirus was concerned, the broadcaster stated that the same was done in a specific context. That due to the aforesaid protest, the Karnataka Government had decided to close schools/colleges for three days to restore peace and harmony. In that context, the

broadcaster stated that it had remarked that when our schools and colleges are facing closure for the past two years due to Covid, it was very unfortunate that the schools were again required to be closed due to Hijab/Burqa.

The broadcaster reiterated that its objective was to highlight how the minds of the students have been polluted by certain political leaders, so much so that the religious uniform had become a major concern that was being prioritized over the studies. Further, in the programme, it had presented the facts related to the story without any biasedness or preconceived notions. As a responsible media house, it had conducted ground reporting on the issue and further reported the version/byte of Police, MLA and other politicians on the aforesaid issue. The broadcaster vehemently denied that its anchor had accused the girl in hijab chanting the '*allah hu-akbar*' of being responsible for the conflict that happened in the government school in Karnataka. It can be clearly seen in the video that the anchor had shown the entire video of both the boys with saffron stoles chanting '*jai shree ram*', after which the girl in hijab can be seen chanting '*allah hu-akbar*' post which the anchor has stated the same to have resulted in tension in the school. The broadcaster stated that it had shown the entire video wherein the boys in saffron stole continued chanting '*jai shree ram*' and had shown its concern on the danger the said video clipping would cause in the western media.

In the programme, it had fairly presented how innocent students were being dragged into the dearth of religious fights at such a young age when their only focus should be their careers, irrespective of the religion they are coming from. The broadcaster stated that it had even read out an Order from the Court which gave private institutions the right to have their own dress code and thereby have only emphasized the importance of equality among all students coming to the school to study as vested upon the citizens of our country by the Constitution of India.

The broadcaster vehemently denied that the aforesaid reporting disrupts the religious sentiments and sensitivity amongst people. The said video was widely circulated and had led people from other countries to question the education system of our country, and the same was reported by it as is without any manipulations or additions.

Decision of NBDSA

NBDSA, at its meeting held on 31.5.2022, considered the above complaint, the response dated 27.2.2022 received from the broadcaster, the complaint filed with NBDSA, and the rejoinder filed by the complainant. NBDSA, therefore, decided to call the complainant and the broadcaster for a hearing at the next meeting as it was necessary to determine whether the broadcaster had violated the Code of Ethics & Broadcasting Standards and the Guidelines issued by NBSA.

On being served with the notices, the following were present for the hearing on 15.6.2022:

Complainant
Mr. Matin Mujawar

Broadcaster:
Ms. Ritwika Nanda, Advocate
Mr. Piyush Choudhary, Chief Manager, Legal
Ms. Annie, Assistant Manager - Legal
Mr. Anurag Singh – Editorial Representative, ZMCL

Submissions of Complainant:
The complainant at the outset submitted that he was unable to understand the topic of the programme "DNA: Karnataka Hijab Row - कट्टरता की पढाई का मास्टर कौन?" which targeted a specific community and was communal & controversial in nature. In the programme, the complainant submitted:

हिजाब विवाद को लेकर कर्नाटक में ऐसी तनाव पूर्ण स्तिथि थी के जिस के कारण शैक्षणिक संस्था कुछ दिनों के लिए बंद किया गए थे ताकि कोई अनुचित प्रकार न हो ऐसे समय में भड़काऊ खबरों द्वारा ZEE न्यूज़ माध्यम आग में तेल डालने का काम कर रहा था जो पत्रकारिता के आचरण और सिद्धांतो के विरुद्ध है

जब बुरका पहने एक लड़की कॉलेज में प्रवेश कर रहे थी तब वहा मौजूद भगवा रुमाल पहने लड़के एक बड़ी तादाद में थे जो हिजाब के विरोध में प्रदशन करने आये थे वो उस लड़की को कॉलेज में प्रवेश करने से रोक रहे थे. जयश्री राम के नारे लगा रहे थे. उन हजारो लड़को के जवाब में उस अकेल लड़की ने अल्लाह हुअक्बर के नारे लगाए और ये कहा के इन लोगों को मेरा बुरका हटाने का हक किसने दिया ???

इस पर सुधीर चौदरी कहता है के "हम आप को अभी से बता देते है अब क्या होगा" "इसके बाद ये तस्वीरें वायरल होजायेगी जो की हो भी गयी है. **पाकिस्तान जैसे जो देश है "और हमरे ही देश में जो पाकिस्तान के कट्टर समर्थक है**" वो ये आरोप लगाना शुरू करेंगे के इतने सारे छात्र मिलकर एक मुस्लिम लड़की को परेशान कर रहे है. इस के बाद पश्चिमी मिडिया यहाँ पर आएगा और फिर भारत की छबि को ख़राब किया जायेगा और कहा जाएगा के भारत में मुस्लिम लड़किया, मुस्लिम छात्राये बिलकुल भी सुरक्षित नहीं है. देखिये उनके साथ क्या हो रहा है"

इस तरह अल्पसंख्यको के प्रति भड़काऊ भाषा का प्रोयग किया है और भारत में बुरके और हिजाब के प्रदर्शन में उतरे मुस्लिम समुदाय को सीधे सीधे पाकिस्तान का समर्थक कह कर भड़काया है. ये पत्रकारिता के आचरण और सिद्धांतो के विरुद्ध है.

सुधीर चौधरी :" **हम आप को बता सकते है के कोविड तो एक न एक दिन चला जाएग, कोविड की तो वैक्सीन आगयी है. लेकिन ये जो मुद्दा आज आया है ये कोविड से भी कही खतरनाक है. इस बीमारी की कोई वैक्सीन नहीं है.** और ये बीमारी कोविड से भी ज्यादा खतरनाक है और अब आप सोचिये हिजाब की वजह से करनाटक में स्कुल और कॉलेज बंद करने पर गये है इसे से ज्यादा दुर्भाग्य की बात क्या हो सकती है."

"इस पुरे समय में मुस्लिम समाज को टारगेट करने के हेतु **हिजाब पहने हुए लड़कियों को ही स्क्रीन पर दिखया गया. ये लड़किया** संविधानिक तरीके से हिजाब की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रही है उन्हें कोविड बीमारी से भी ज्यादा खतरनाक कहा गया है**.** ZEE न्यूज़ का यह बरताव असंविधानी है. मानवाधिकार के विरोध में और अमानवीय है.

खबरों के द्वारे ZEE न्यूज़ द्वारा अल्पसंख्यक समाज को लक्षित किया है और सांप्रदायिक भावनाओं को भड़का ने का कार्य किया है, इस्लाम और मुस्लिम समुदाय प्रति नफरत और आक्रोश को उत्तेजित किया है यह विषय केवल NBDSA के मानको का उलंघन नहीं करता बल्कि यह विषय IPC की धरा २९८, ५०५(१)(२) के अनुसार करवाई के लिए उत्तरदायी है. खबरों के नाम पर न्यूज़ माध्यम का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है जो देश के एकता और अखंडता तो गहरी चोट पहुंचने तथा हिंसा के तरफ लेजानेवाली साजिश का एक महत्वपूर्ण भाग है. ZEE न्यूज़ द्वारा इस्तेमाल की गयी भाषा पत्रकारिता के आचरण और सिद्धांतो के विरुद्ध है नस्ली एवं धार्मिक सद्भाव तथा केबल टेलीविजन नेटवर्क (विनियमन) अधिनियम 1995 की धारा 19 और 20 और टेलीविजन चैनलों नीति निर्देशों के खंड 8 का खंडन करने वाली है.

Submission of Broadcaster:

The broadcaster submitted that the broadcast was in relation to the Hijab Controversy which emerged in Karnataka, when certain Muslim Girl students raised a demand to attend classes wearing the Hijab/Burqa, which demand was subsequently rejected by the college administration and, as a result, the said students had stopped going to school from 21st December 2021 and started a protest.

The allegation of the complainant that a certain community was targeted in the broadcast was false as the broadcast pertained only to the protest initiated by certain students who were not representative of the community as a whole. The broadcaster submitted that the term *"bimari"* was used by it in the statement ***"स बीमारी की कोई वैक्सीन नहीं है. और ये बीमारी कोविड से भी ज्यादा खतरनाक है"*** only to highlight the practice of raising issues in the country. In the programme, it had analyzed the issue of hijab, whether the right to wear a hijab to school is a fundamental right and whether this issue can be raised by students, particularly as the students had been previously attending school without wearing a hijab. As several educational institutions were shut down in Karnataka due to the protest, the programme also analyzed why the issue of hijab was being raised by the students now and how it directly affected their studies and the studies of other students. The telecast analyzed the situation in India with other countries, including predominantly Muslim countries, where wearing a hijab to school is not permitted. The telecast also addressed the question of whether there were any extraneous factors at play or not, which was also raised by the colleges in their submissions before the Karnataka High Court.

NBDSA, during the hearing, noted that the issue of wearing hijab in school could be discussed as a standalone issue, and the anchor could have expressed his views on the issue. However, NBDSA asked the broadcaster to explain the statements made by the anchor in the programme "*Covid se bhi khattarnak"; "iss bimari ka koi vaccine nhi hai", etc.*, which gave a communal colour to the programme.

The broadcaster submitted that the statements made by the anchor have to be considered in the context of the issue raised. By making the aforesaid statements, the anchor was expressing his views against extremism and extremist thought that the general understanding of the issue was that the students were not operating out of their own will and that there were certain external forces at play.

The broadcaster further submitted that the statement made by the anchor was not against an entire community and that it was the complainant who was presuming that the anchor, through his statement, was targeting an entire community. That the said statement pertained only to a segment of the community.

In the programme, eminent personalities from the community were appreciated by the anchor, who asked the students whether they aspired to become personalities such as the late President APJ Abdul Kalam. That the central theme of the programme was the disturbance in the education of students, particularly when the schools and colleges were already closed for the past two years due to Covid pandemic.

The broadcaster, however, submitted that the impugned programme was completely neutral, fair and impartial, and in the broadcast, the anchor had deprecated both the Hindu and Muslim students for carrying out a protest and for raising religious slogans.

Decision

NBDSA went through the complaint, response from the broadcaster, and also gave due consideration to the arguments of the complainant and the broadcaster and reviewed the footage of the broadcast.

The Authority observed that while broadcasting a programme on any subject, there can be various views, however, the presenter must adhere to the Code of Ethics & Broadcasting Standards (Code of Ethics) and follow the principles of objectivity. While there was no problem with regard to the subject of the programme, however, there was no reason to extend the narrative to state "हम आप को अभी से बता देते है अब क्या होगा . इसके बाद ये तस्वीरें वायरल होजायेगी जो की हो भी गयी है. पाकिस्तान जैसे जो देश है और हमरे ही देश में जो पाकिस्तान के कट्टर समर्थक है वो ये आरोप लगाना शुरू करेंगे के इतने सारे छात्र मिलकर एक मुस्लिम लड़की को परेशान कर रहे है. इस के बाद पश्चिमी मिडिया यहाँ पर आएगा और फिर भारत की छबि को ख़राब किया जायेगा और कहा जाएगा के भारत में मुस्लिम लड़किया, मुस्लिम छात्राये बिलकुल भी सुरक्षित नहीं है. देखिये उनके साथ क्या हो रहा है. हम आप को बता सकते है के कोविड तो एक न एक दिन चला जाएग, कोविड की तो वैक्सीन आगयी है. लेकिन ये जो मुद्दा आज आया है ये कोविड से भी कही खतरनाक है. इस बीमारी की कोई वैक्सीन नहीं है. और ये बीमारी कोविड से भी ज्यादा खतरनाक है और अब आप सोचिये हिजाब की वजह से करनाटक में स्कुल और कॉलेज बंद करने पर गये है इसे से ज्यादा दुर्भाग्य की बात क्या हो सकती है." No doubt, in a programme like this which is the analysis of the news, the anchor can express his/her views so long as the statements adhere to the Code of Ethics. However, when the aforesaid assertions are viewed contextually and in entirety, keeping in view the tenor and the slant which is given to the statements, NBDSA finds that the manner in which the narrative was expressed, it lacked probity and the presenter could have eschewed the same. In view of the above, the Authority found that the programme had violated the principles of Impartiality and Objectivity as enshrined in the Code of Ethics.

NBDSA, therefore, disapproves the aforesaid narrative and cautions the channel to be careful in future.

In view of the above, NBDSA, therefore, directed that the video of the said broadcast, if still available on the website of the channel, or YouTube, or any other links, should be removed immediately, and the same should be confirmed to NBDSA in writing within 7 days. NBDSA decided to close the complaint with the above observations and inform the complainant and the broadcaster accordingly.

NBDSA directs NBDA to send:
(a) A copy of this Order to the complainant and the broadcaster;
(b) Circulate this Order to all Members, Editors & Legal Heads of NBDA;
(c) Host this Order on its website and include it in its next Annual Report and
(d) Release the Order to media.

It is clarified that any statement made by the parties in the proceedings before NBDSA while responding to the complaint and putting forth their view points, and any finding or observation by NBDSA in regard to the broadcasts, in its proceedings or in this Order, are only in the context of an examination as to whether there are any violations of any broadcasting standards and guidelines. They are not intended to be 'admissions' by the broadcaster, nor intended to be 'findings' by NBDSA in regard to any civil/criminal liability.

Sd/-

Justice A.K Sikri (Retd.)
Chairperson

Place: New Delhi
Date : 23.07.2022